• नन्द चतुर्वेदी रचनावली का लोकार्पण

"नन्द चतुर्वेदी आधुनिक कविता के पुरोधा थे। उनकी कविता समय और परिस्थितियों के मर्म का उद्घाटन करती हैं। कविता उनके लिए मानवानुभूति वाले आत्मानुभूति का विषय था।" उक्त विचार साहित्य अकादमी, नई दिल्ली तथा नन्द चतुर्वेदी फ़ाउंडेशन उदयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में नन्द चतुर्वेदी जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद में मुख्य वक्ता के रूप में प्रख्यात साहित्यकार नन्द किशोर आचार्य ने व्यक्त किए।

आरम्भिक वक्तव्य देते हुए माधव हाड़ा ने कहा कि नन्द चतुर्वेदी ने स्वयं को कभी खूँटे से नहीं बाँधा, भले ही उनको 'समाजवादी कवि' कहा गया किन्तु हमेशा उनका कवि आगे रहा, राजनैतिक कार्यकर्ता नहीं। नन्द चतुर्वेदी फ़ाउंडेशन के अध्यक्ष अरुण चतुर्वेदी ने अपने उद्बोधन में कहा कि मैं राजनीति शास्त्र का विद्यार्थी होने के नाते उन्हें साहित्यकार के रूप में बारीकी से नहीं देख पाता हूँ, उन्होंने उनकी कविता के उदाहरण देकर बताया कि राज्य से उम्मीद उनकी कविता में है, वे समझ के साथ समय की चेतना को परिभाषित करते हैं। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में स्वागत उद्बोधन अजय शर्मा साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने

बाएँ से दाएँ : अजय कुमार शर्मा, अरुण चतुर्वेदी, नंदकिशोर आचार्य, पल्लव, अनुराग चतुर्वेदी एवं माधव हाड़ा

दिया जबकि नन्द चतुर्वेदी फ़ाउंडेशन के सचिव अनुराग चतुर्वेदी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। पल्लव द्वारा चार खण्डों में संपादित और राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित नन्द चतुर्वेदी रचनावली का लोकार्पण किया गया। परिसंवाद के प्रथम सत्र में नन्द चतुर्वेदी के काव्य के महत्व का प्रतिपादन करते हुए आलोचक शंभु गुप्त ने कहा कि नन्द बाबू में आत्म निरीक्षण, आत्म संशोधन की भावना है और वे आत्मसजग भी हैं। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली के देवेन्द्र चौबे ने कहा कि यदि लेखक को यह पता नहीं कि वह किसके लिए लिख रहा है तो वह लेखन उपयोगी नहीं होता है। समय, राजनीति, दर्शन इत्यादि के सूत्र नन्द चतुर्वेदी की कविताओं को महत्वपूर्ण बनाते हैं।

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर की रेणु व्यास ने कहा कि नन्द बाबू ने अपने को अस्थिर और अधीर समय का कवि कहा है। कवि हेमंत शेष ने कहा कि कुछ लेखकों का साहित्य जलने वाले धूप की तरह होता है। नन्द बाबू का साहित्य भी ऐसा ही है जो धीमे-धीमे जलता है लेकिन ख़ुशबू देर तक देता रहता है। कवि ब्रजरतन जोशी के अनुसार नन्द बाबू का गद्य बहु ध्वन्यार्थी गद्य है। गद्य व काव्य दोनों में बिम्बात्मकता में अंतर है, काव्य में बिम्ब के लिए स्थान होता है लेकिन गद्य में इसके लिए अनुभव की प्रामाणिकता अवश्यक है, नन्द बाबू के गद्य पर यह व्याख्या बहुत सटीक है। मलय पानेरी ने कहा कि नन्द बाबू का साहित्य सामाजिक रचना का उद्यम करता है, उनका साहित्य हमारी चिन्तन विधा को भी उद्वेलित करता है। प्रसिद्ध साहित्यकार दामोदर खड़से ने कहा कि नन्द बाबू की कविता से पाठक आसानी से जुड़ जाता है। जो दिखता नहीं उसे जो दिखा दे वो कालजयी रचना होती है।

रिपोर्ट : कीर्ति चुंडावत, ई-मेल : kirtichundawat25@gmail.com